



(A - 16)
जय जय मुनिवर
विष्णुकुमार

(राग-तेरे पूजन को भगवान)

जय जय मुनिवर विष्णुकुमार, गुरु तुम धर्म के रक्षक।
दुष्ट बलि ने कुमति उपाई, मुनियों की नर यज्ञ रचाई;
मय गया गजपुर उड़ा डार....जय० १
संध घातकी बबर ये पाकर, पुष्पदन्त मुनि अति बभरा कर;
आन के आप से करी पुकार....जय० २
तुम हो स्वामी अति बलधारी, तप बल सिद्धि प्राप्त है भारी;
धर्म पै चलता आज कुठार....जय० ३
बौने द्विज का लोभ बनाया, यमकार तप का दिखलाया;
पडगया बलि नृप यरज्ञ मजार....जय० ४
मुनियों का उपसर्ग उटाया, सबको धर्म दया बतलाया;
हुआ जिनधर्म का जय जयकार....जय० ५
क्षमाभाव कर बलि को छोडा, उसने हिंसा से मुझ मोडा;
जिनमत धार लिया सुभकार....जय० ६
गजपुर के श्रावक नरनारी कठिन प्रतिज्ञा दिल में धारी,
कष्ट टरे पर करें आडार....जय० ७
विष्णु मुनि आदर्श हमारे, प्रेम सुपाठ पढावन डारे;
जय बोलो शिवराम पुकार....जय० ८